बुवाई सम्भव हो सके। अधिक उपज लेने के लिए 21-21 प्रजाति को अप्रैल प्रथम पखवारे में (प्रदेश के मैदानी क्षेत्र में तराई को छोड़कर) ग्रीष्म कालीन मूंग के साथ सह फसल के रूप में जायद में बोना चाहिए।

(अ) फसल नवम्बर के मध्य तक तैयार हो जाती है एवं गेहूँ की बुवाई में देरी नहीं होती है।

(ब) जून में बोई गई फसल से उपज अधिक होती है।

(स) अरहर को मेंड़ों पर बोने से अच्छी उपज मिलती है।

बीज का उपचार :-

सर्वप्रथम 1 किग्रा० बीज को 2 ग्राम थीरम 1 ग्राम कार्बोन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा + 1 ग्राम कार्बोन्डाजिम से उपचारित करें। बोने से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। एक पैकेट 10 किग्रा० बीज के लिए पर्याप्त होता है। एक पैकेट राइजोबियम कल्चर को साफ पानी में घोल बनाकर 10 किग्रा० बीज के ऊपर छिड़ककर हल्के हाथ से मिलायें जिससे बीज के ऊपर एक हल्की पर्त बन जाये।

बीज की दर :-

15-20 किग्रा०/हे० लाइन की दूरी 45-60 सेमी० एवं पौधे से पौधे की दूरी 45X20 सेमी० 60X20 सेमी० पूर्वो उत्तर प्रदेश में बाढ़ या लगातार वर्षा के कारण बुवाई में बिलम्ब होने की दशा में सितम्बर के प्रथम पखवारे में बहार की सुध फसल के रूप में बुवाई की जा सकती है।

परन्तु कतार से कतार की दूरी 30 सेमी० एवं बीज की मात्रा 20-25 किग्रा०/हे० की दर से प्रयोग करना चाहिए।

उर्वरकों का प्रयोग :-

अरहर की अच्छी उपज लेने के लिए 10-15 किग्रा० नत्रजन 40-45 किग्रा० फास्फोरस तथा 20 किग्रा० सल्फर की प्रति हे० आवश्यकता होती है। अरहर की अधिक से अधिक उपज लेने के लिए फास्फोरस युक्त उर्वरकों जैसे-सिंगल सुपर फास्फेट, डाई अमोनियम फास्फेट का प्रयोग करना चाहिए।

सिंगल सुपर फास्फेट 250 किग्रा० या 100 किग्रा० डाई अमोनियम फास्फेट तथा 20 किग्रा० सल्फर बुवाई के समय उनकी पंक्तियों में 20 किग्रा० नत्रजन प्रति हे० की दर से दें तथा एक महीना बाद 10 किग्रा० नत्रजन प्रति हेक्टेयर की टापड्रेसिंग करें। सितम्बर में बुवाई हेतु 30 से 40 किग्रा० प्रति हेक्टेयर नत्रजन के प्रयोग से अच्छी उपज प्राप्त होती है।

सिंचाई :-

अरहर 21-21 तथा यू०पी०ए०एस०-120 तथा आई०सी०पी०एल०-151 को पलेवा करके तथा अन्य प्रजातियों को वर्षाकाल में पर्याप्त नमी होने पर बोना चाहिए। खेत में कम नमी अवस्था में एक सिंचाई फलियाँ बनने के समय अक्टूबर माह में अवश्य की जाएं। देर से पकने वाली प्रजातियों में पाले से बचाव हेतु दिसम्बर या जनवरी माह में सिंचाई करना लाभप्रद रहता है।

निकाई - गुड़ाई :-

वर्षा काल में खरपतवारों की बढ़वार लगभग तीन चार सप्ताह बाद काफी हो जाती है। अत: बुवाई के 1 माह के अन्दर ही एक निराई करनी चाहिए यदि अरहर की शुध खेती की गयी हो तो दूसरी निराई पहली निराई के 20 दिन बाद करना आवश्यक होगा। घास तथा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को रसायनिक विधि से नष्ट करने के लिए पेंडामैथलीन (30 ई०सी०) 3.3 लीटर या एलाक्लोर (50 ई०सी०) 4 लीटर मात्र को 700-800 लीटर पानी में घोलकर आखिरी जुताई के पहले भूमि पर छिड़काव करके मिट्टी में मिला दें।

फसल सुरक्षा (फली बेधक कीट उपचार) :-

इसकी रोकथाम हेतु निम्न में से किसी एक कीटनाशक रसायन का छिड़काव फसल में फूल आने पर करना चाहिए यदि आवश्यकता हो तो इसका छिड़काव 15 दिन बाद करें।

1. मोनोक्रोटोफास (36 ई०सी०) 1000 मिली० प्रति हेक्टेयर
2. इन्डो सल्फान (36 ई०सी०) 1.5 ली० प्रति हेक्टेयर
3. निबोली 5 प्रतिशत + 1 प्रतिशत साबुन घोल

अरहर की फली मक्खी उपचार :- फूल आने के बाद मोनोक्रोटोफास (36 ई०सी०) या डाईमिथोएट 30 ई०सी० 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रभावित फसल पर छिड़काव करें।